आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:27-09-14

हम आत्माओं को ज्ञान और योग सिखलाकर उत्तम-पुरुष बनाने वाले, सर्वोत्तम भगवान शिव ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें यह बात सर्व को बतानी है की यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जो सारे कल्प में एक ही बार आता है.

यह तो हम सब जानते हैं की अभी बाबा आये हैं हम आत्माओं को पवित्र बनाकर वापस घर ले जाने के लिए फिर वहॉ से हम आत्माये वापस नम्बरवार अपना-अपना पार्ट बजाने इस धरा पर आयेंगे. फिर धीरे-धीरे हमारी आत्मा की पवित्रता जन्म -बाय- जन्म, सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में कम होती जाती है और कलियुग के अन्त में हमारी पवित्रता संपूर्ण नष्ट हो जाती हैं. तब सर्वोत्तम (सर्व आत्माओं में उत्तम) भगवान शिव इस धरा पर आते है और पुरुषोत्तम संगमयुग प्रारंभ होता हैं.

आज बाबा ने हमें आत्माओं को पुरुषोत्तम बनाने वाले इस पुरुषोत्तम संगमयुग की महिमा सब को बताने को कहा है इस पर ही हम विचार-सागर-मंथन कर कुछ पॉइन्ट्स निकालेंगे.

- पुरुषोत्तम शब्द का मतलब है - उत्तम-पुरुष और पुरुष कहा जाता है आत्मा को. पुरुषोत्तम को कहा जाता है उत्तम-आत्मा. बाबा ने ही हमें समझाया है की इस सृष्टि चक्र के ड्रामा में पार्ट बजाते, आत्मा ही उत्तम से कनिष्ठ और फिर कनिष्ठ से उत्तम बनती हैं.

- पुरुषोत्तम आत्मा माना संपूर्ण निर्विकारी आत्मा. पुरुष और स्त्री दोनों उत्तम बनते हैं इसलिए नाम ही है पुरुषोत्तम.

- ड्रामा में पार्ट बजाते-बजाते, कलियुग के अन्त में जब हम आत्माये संपूर्ण कनिष्ठ बन जाती है तब सर्वोतम भगवान शिव स्वयं इस धरा पर आकर हमें ज्ञान और योग सिखलाकर वापस संपूर्ण निर्विकारी - पुरुषोत्तम बनाते हैं.

- जब परमात्मा शिव स्वयं इस धरा पर आते हैं तब से पुरुषोत्तम संगमयुग प्रारंभ होता हैं.

- पुरुषोत्तम का मतलब तो हमने समझा लेकिन इसको संगमयुग कहा जाता है क्योंकि इसी समय आत्मा और परमात्मा का मिलन (संगम) होता हैं. बाबा कहते है कुंभ मैले में तो

तुम जन्म -बाय- जन्म कितनी बार गये हो लेकिन वहॉ गंगा में स्नान करने से तुम्हारी आत्मा पावन नहीं बनती है. सत्य हकीकत यह है की तुम्हारी आत्मा तो इस परमात्मा के ईश्वरीय ज्ञान-गंगा से ही पावन होती हैं.

- पुरुषोत्तम संगमयुग का दूसरा अर्थ है - कलियुग का अन्त और सतयुग आदि का संगम.

- इस संगमयुग को सबसे सुहावना और कल्याणकारी युग भी इसलिए कहा जाता हैं जब की स्वयं भगवान शिव इस धरा पर आकर विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण करते हैं.

- आज की मुरली में बाबा ने इस पुरुषोत्तम संगमयुग का एक और अर्थ बताया है - वेश्यालय का अन्त, शिवालय का आदि. अब है वेश्यालय जहॉ सर्व आत्माये विकारी हैं फिर होता है शिवालय (सतयुग) जहॉ सर्व आत्माये निर्विकारी हैं.

- भगवान की महिमा में गाते भी है, वह है ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, पतित-पावन. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही ज्ञान से आत्माओं की सद्गति करते हैं. शिवबाबा कहते है भक्ति से किसी की सद्गति नहीं होती, इस ईश्वरीय ज्ञान से ही सद्गति होती हैं.

भक्ति मार्ग में आज भी पुरुषोत्तम मास की महिमा बहुत है लेकिन सत्य जानते नहीं की कब और क्यों पुरुषोत्तम मास होता है. उन आत्माओं को इस पुरुषोत्तम संगमयुग का सत्य परिचय देंगे तो उनका भी कल्याण हो जायेगा.

ॐ शांति.